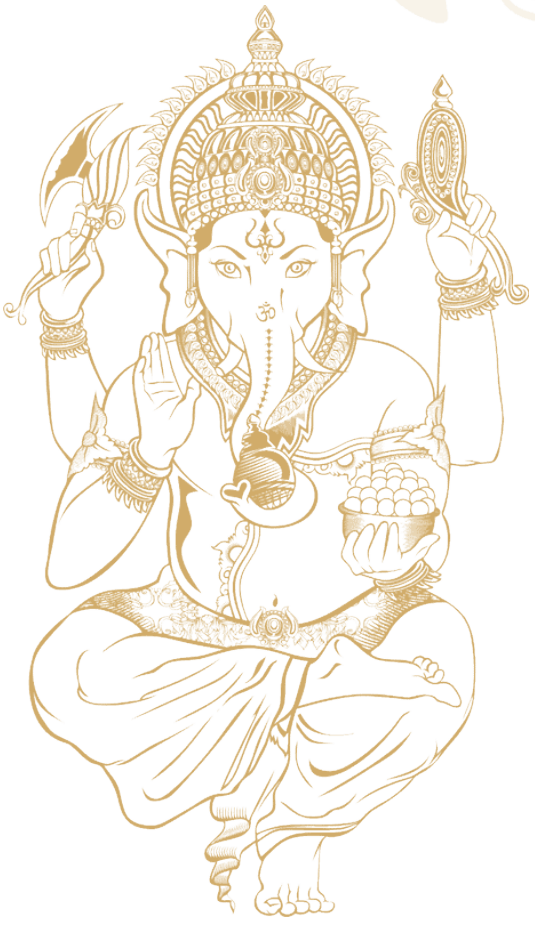

Aakanksha ji

01 Apr 1987

11:30 PM

Rewa

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121416601**

तिथि 01/04/1987 **समय** 23:30:00 **वार** बुधवार **स्थान** Rewa **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:40:40
अक्षांश 24:32:00 उत्तर **रेखांश** 81:18:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:04:48 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	12:03:27 घं
वेलान्तर	00:04:05 घं
सूर्योदय	05:57:41 घं
सूर्यास्त	18:20:29 घं
चैत्रादि संवत	2044
शक संवत	1909
मास	चैत्र
पक्ष	शुक्ल
तिथि	4
नक्षत्र	कृतिका
योग	प्रीति
करण	वणिज

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मेष
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	गरूड़
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	अ-अश्विनी
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-स्वर्ण
होरा	गुरु
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

सूर्य 5वर्ष 11मा 8दि

राहु

10/03/2010
10/03/2028

राहु	21/11/2012
गुरु	16/04/2015
शनि	20/02/2018
बुध	08/09/2020
केतु	27/09/2021
शुक्र	27/09/2024
सूर्य	21/08/2025
चन्द्र	20/02/2027
मंगल	10/03/2028

योगिनी

उल्का 5वर्ष 11मा 8दि

उल्का

11/03/2023
10/03/2029

उल्का	10/03/2024
सिद्धा	10/05/2025
संकटा	09/09/2026
मंगला	09/11/2026
पिंगला	11/03/2027
धान्या	09/09/2027
भ्रामरी	10/05/2028
भद्रिका	10/03/2029

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			26:47:43	वृश्चि	ज्येष्ठा	4	बुध	गुरु	---	0:00			
सूर्य			17:47:59	मीन	रेवती	1	बुध	बुध	मित्र राशि	1.20	मातृ	पितृ	वध
चंद्र			26:47:59	मेष	कृतिका	1	सूर्य	सूर्य	सम राशि	1.28	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल			03:40:29	वृष	कृतिका	3	सूर्य	शनि	सम राशि	1.51	कलत्र	भ्रातृ	जन्म
बुध			20:47:01	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	गुरु	सम राशि	1.08	भ्रातृ	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु		अ	13:32:03	मीन	उ०भाद्रपद	4	शनि	राहु	स्वराशि	1.12	पुत्र	धन	साधक
शुक्र			11:11:16	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	शनि	मित्र राशि	1.23	ज्ञाति	कलत्र	क्षेम
शनि	व		27:29:00	वृश्चि	ज्येष्ठा	4	बुध	गुरु	शत्रु राशि	1.19	आत्मा	आयु	वध
राहु			17:49:23	मीन	रेवती	1	बुध	बुध	सम राशि		---	ज्ञान	वध
केतु			17:49:23	कन्या	हस्त	3	चंद्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	सम्पत

लग्न-चलित

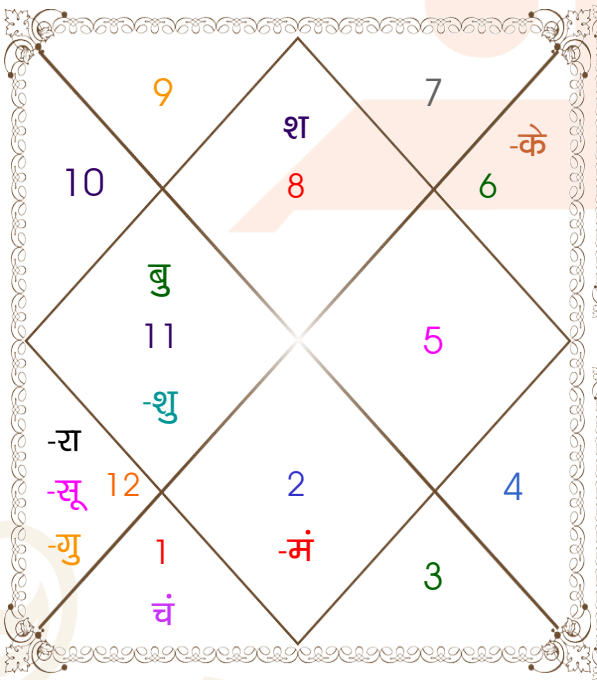

चन्द्र कुंडली

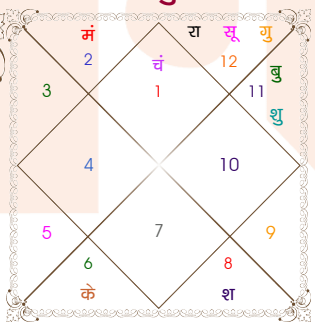

नवमांश कुंडली

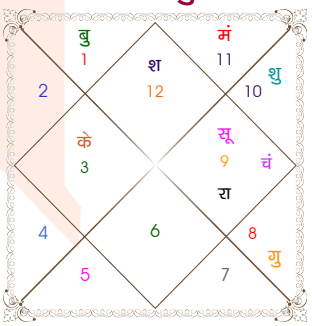

सर्वाष्टकवर्ग

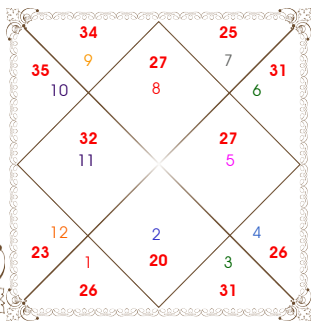

दशमांश कुंडली

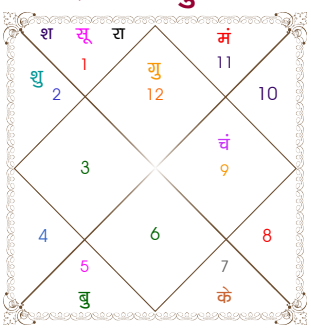

Kalsarp dosh nivaran kendra
Trimbakeshwar,nashik 42212
8975926418 , 9284065608
kalsarpnivaranpuja@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म कृतिका नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्मराशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल है। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, वर्ग गरूड, योनि मेष, नाड़ी अन्त्य तथा गण राक्षस है। कृतिका नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने के कारण आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "अ" या "आ" से प्रारम्भ होगा। यथा-अरूण, अनुज, आदित्य आदि।

इस नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न होने के कारण आप कंजूस किस्म के व्यक्ति होंगे। आप धन का संग्रह तो करेंगे परन्तु व्यय करने में अत्यन्त ही कृपणता का परिचय देंगे। आपके द्वारा किए गए कार्यों से अन्य लोगों को यदा कदा कष्ट होगा। आपको नींद अधिक मात्रा में आएगी तथा आपके मन में काम करने की इच्छा का भी अभाव रहेगा।

कृपणः पापकर्माश्च क्षुधालुर्नित्य पीड़ितः।
अकर्म कुरूते नित्यं कृतिका संभवेन्नरः।।
मानसागरी

अर्थात् कृतिका नक्षत्र में उत्पन्न बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से व्याकुल, दूसरे की स्त्री में अनुरक्त, क्रूर तथा कृतध्न एवं धनी होता है।

आप सामान्य भोजन करने वाले होंगे तथा किसी की भी बात को सहन करने की शक्ति का आपमें अभाव रहेगा। साथ ही आप अपने क्षेत्र के विख्यात व्यक्ति भी होंगे।

बहुभुक् परदारतस्तेजस्वी कृतिकासु विख्यातः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् कृतिका नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुभोजन कर्ता, परस्त्रीगमन करने वाला, असहनशील तथा विख्यात होता है।

विद्या आप अवश्य प्राप्त करेंगे और यही विद्या आपका धन होगी। आप विद्वान तथा उच्चाधिकारी भी हो सकते हैं। साथ ही आप तेजस्वी पुरूष भी होंगे।

तेजस्वी बहुलोद्भव प्रभुसमोडमूर्खश्च विद्याधनी।
जातक परिजातः

अर्थात् कृतिका में उत्पन्न जातक तेजस्वी, उच्चाधिकार प्राप्त, विद्वान तथा विद्या का धनी होता है।

सत्य का पालन आप अपने जीवन में कम ही करेंगे। व्यर्थ भ्रमण करना भी आपकी दिनचर्या का एक अंग होगा। बोलने में आप कभी कभी कटु शब्दों का प्रयोग करेंगे जो सुनने वाले को अच्छा नहीं लगेगा।

आप अपने कर्तव्यों का पालन भी अल्प मात्रा में ही करेंगे। यदा कदा धनाभाव से भी आप जीवन में कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे।

क्षुधाधिकः सत्यधनैर्विहीना वृथाटनोत्पन्नमतिकृतध्नः।
कठोरवाग्गहितकर्म कृत्स्याचेत्कृतिका जन्मनि यस्य जन्तो।।
जातकाभरणम्

अर्थात् कृतिका में उत्पन्न मनुष्य भूख से पीड़ित सत्य एवं धन से रहित, व्यर्थ ही घूमने वाला, कृतध्न कटुवक्ता तथा अकर्तव्य करने वाला होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा।

अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु अल्प मात्रा में रहेंगे तथा वे आपसे पराजित तथा प्रभावित होंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में क्रोध तथा उग्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा। आपका सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं शरीर में पूर्ण रूप से कोमलता विद्यमान रहेगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करेंगे तथा प्रसन्नताा पूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। द्रव्यों के प्रति भी यदा कदा आपकी आसक्ति रहेगी एवं कभी कभी सामान्य बीमारियों से भी आप पीड़ित रहेंगे।

मेष राशि में जन्म लेने के कारण आप अल्प भोजन करने वाले होंगे। तथा अन्य भाई बहिन हुए तो उनमें आप श्रेष्ठ होंगे।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः

आपके शरीर का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा आँखें लालिमा से युक्त गोल तथा चंचल होंगी। किसी घाव या चोट के कारण सिर में निशान होगा तथा सिर में बाल भी कम ही होंगे। आपके हाथ तथा पैर कान्ति युक्त होंगे। जल से आप नैसर्गिक रूप से भयभीत रहेंगे। साहस का आपमें अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन में कठिन से कठिन समस्याओं का आप साहसपूर्वक मुकाबला करेंगे। समाज से आपको उचित आदर मिलेगा। बुद्धि आपकी चंचल होगी तथा धन को आप मान सम्मान से भी अधिक महत्व प्रदान करेंगे जिससे समय समय पर समस्याएं उत्पन्न होंगी। आपके पास मित्रों तथा सहयोगियों की बहुलता रहेगी। साथ ही पुत्रों की संख्या भी कन्याओं की अपेक्षा अधिक होगी। स्त्री जाति आपकी विशेष रूप से कमजोरी रहेगी। लेकिन सभी को आप स्नेह की दृष्टि से देखेंगे। परिणाम स्वरूप सभी लोग आप पर विश्वास रखेंगे तथा सम्मान प्रदान करेंगे।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।
कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चञ्चलो मानवित्तः।।
पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।
सस्नेहतोयभीरू व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।
सारावली

धन को आवश्यकता से अधिक महत्व देना तथा स्त्रियों के प्रति अधिक आकर्षित रहना इस प्रवृति से आपके बुजुर्ग तथा श्रेष्ठ संबंधी असन्तुष्ट हो जाएंगे परिणाम स्वरूप या तो वे आपसे अलग हो जाएंगे या आप स्वयं उनसे अलग हो जाएंगे। साथ ही घर के सारे कार्य आप अपनी पत्नी के कथनानुसार ही सम्पन्न करते हैं। अतः वैमनस्य में वृद्धि होती रहेगी। धन तथा पुत्रों से आप आजीवन युक्त रहेंगे तथा अपने वैभव से समाज में अच्छी कीर्ति प्राप्त करेंगे।

वृतातास्रदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।
शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरूः क्रिये।।
बृहज्जातकम्

आपका स्वभाव शीघ्र क्रोधित होकर शीघ्र ही प्रसन्न होने वाला होगा तथा इधर उधर भ्रमण करना आपको रूचिकर लगेगा। आपकी हथेलियों में शौर्यसूचक चिन्ह यथा चक्र पताका आदि हो सकते हैं। स्त्री वर्ग में आप विशेष प्रिय तथा सम्मानीय समझे जाएगे। आपके अर्न्तमन में सेवा का भाव स्वाभाविक रूप से रहेगा। चाहे आप कैसी ही विषम परिस्थितियों में चल रहे हों अन्य लोगों की सहायता करने के लिए आप तत्पर रहेंगे।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।
जातकाभरणम्

भ्रमण में आपकी रूचि ऐसे स्थानों में जाने की होगी जो अगम्य हो अर्थात् जहां आसानी से नहीं पहुँचा जा सकता हो। सामाजिक संबंधों की विस्तृता के कारण यदा कदा आप मांस, मदिरा आदि पदार्थो का भी भक्षण कर सकते हैं।

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आपके स्वभाव में कभी कभी उग्रता का समावेश हो जाता हैं। यह उग्रता जब क्रोध के रूप में उत्पन्न होगी तो उससे अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पडेगा। प्रवृति में चंचलता के कारण आप कभी कभी मिथ्या भाषण भी करेंगी।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरूर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।
संचारशीलश्चपलोडनृतोक्ति व्रणाङ्किताङ्गः क्रियभे प्रजातः।।

फलदीपिका

यौगिक क्रियाओं में भी आपकी रूचि रहेगी तथा सिर पर केश अल्प मात्रा में होंगे। गर्म पदार्थो तथा अन्य पित्त बढ़ाने वाली वस्तुओं से परहेज रखें अन्यथा मस्तिष्क में विकार का योग बनता है। आपको अपने शरीर की भी सुरक्षा का ध्यान रखना चाहिए तथा दुर्घटनाओं से बचना चाहिए।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।
संभवति पुरूषोळयं मेष राशौ।।

जातक दीपिका

आप राक्षस गण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपका स्वभाव कभी कभी व्यर्थ तथा अधिक बाते बोलने वाला होगा। आपके हृदय में करूणा की भावना अल्प ही रहेगी।

क्रोध आपको अधिक आएगा तथा छोटी छोटी बातों से उत्तेजित होना आपकी प्रवृति होगी। आप अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए किसी भी प्रकार के कार्य करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। आप बलवान भी होंगे तथा अन्य जनों से बात बात पर अनावश्यक तर्क करना आपका स्वभाव होगा जिससे अधिकांश लोगों से आपका विरोध रहेगा। अतः अन्य जनों से आपको संयम पूर्वक वार्तालाप करना चाहिए।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।

मानसागरी

आप उन्माद या प्रमेह रोग से पीड़ित हो सकते है। देखने में आपका चेहरा आकारा में बड़ा हो सकता है। कभ5 कभी आप ऐसी वाणी का उपयोग करेंगे जो अन्य जनों को अच्छी नहीं लगेगी। अतः यत्नपूर्वक आपको अपने सम्भाषण में मृदु शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।

जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मेष योनि में उत्पन्न होने के कारण आप अत्याधिक उत्साही प्रवृति के होंगे। आप एक बहुत बड़े योद्धा हो सकते हैं। धन और ऐश्वर्य पूर्ण रूप से आपके पास रहेगा तथा

इसका अभाव नहीं होगा। आपके मन में दूसरों की भलाई करने की उत्कट अभिलाषा होगी तथा प्रयत्न पूर्वक आप अन्य जनों की भलाई करते रहेंगे।

महोत्साही महायोद्धा विक्रमीविभवेश्वरः।
नित्य परोपकारी च मेषयोनौ भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात मेषयोनि का जातक अतिउत्साही, महायोद्धा, पराक्रमी, ऐश्वर्यवान तथा परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रूचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

कार्तिक मास, प्रतिपदा, एकादशी तथा षष्ठी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनो की, मघा नक्षत्र, बवकरण, रविवार, प्रथम प्रहर तथा मेष राशिस्थ चन्द्रमा आपके लिए अशुभ फलदायी है। अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य 1,6,11 तिथियों, मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग तथा बवकरण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, लेन देन आदि शुभ कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। इसके अतिरिक्त रविवार, प्रथम प्रहर तथा मेषराशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्य में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शरीर का भी ध्यान रखे।

यदि आपको समय अनुकूल प्रतीत न हो रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट श्री हनुमान जी की उपासना करनी चाहिए साथ ही सोना, रतांबा, गेहूं, घी, लालवस्त्र आदि पदार्थों को दान करना चाहिए। साथ ही मंगल के तांत्रीय मंत्र के 7 हजार जप करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा लाभमार्ग प्रशस्त होंगे। इसके अतिरिक्त मंगलवार के उपवास भी रखने चाहिए।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ शीं भौमाय नमः।